International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

राम एवं कृष्ण काव्य धारा : प्रमुख कवि एवं काव्य प्रवृत्तियाँ का अध्ययन

Basant Kumar Sain, Research Scholar, Dept of Hindi, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand

Dr Brajlata Sharma, Professor, Dept of Hindi, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand

सार

सूरदास ;1478–1583 सूरदास वेफ जीवन–वृत्त वेफ लिए बहिर्साक्ष्य वेफ रूप में भक्तमाल ;नाभादास, चौरासी वैष्णवन की वार्ता ;गोवुफल नाथद्ध और बल्लभ दिग्विजय ;यदुनाथद्ध का आधार लिया गया है। चौरासी वैष्णवन की वार्ता वेफ अनुसार, वे दिल्ली वेफ निकट 'सीही' वेफ सारस्वत ब्राह्मण परिवार में उत्पन्न हुए थे। वार्ताग्रंथों वेफ अनुसार, सूरदास से महाप्रभु बल्लभाचार्य की भेंट 1509–10 ई. में हुई थी और तब से वे बल्लभाचार्य वेफ शिष्य बनकर पारसोली गाँव में रहने लगे थे। उनका जन्म 1478 ई. तथा निधन 1583 ई. में माना जाता है। वे जन्मांध थे, या बाद में अंधे हुए, इस विषय में विवाद है। उनवेफ निधन पर गोसांई विट्ठलनाथ ने कहा थाμ''पुष्टिमारग को जहाज जात है सो जाकों कछु लेनौ होय सो लेउ।'' गोव(ंन पर्वत पर श्रीनाथ जी वेफ मंदिर की पूर्ण स्थापना पूरनमल खत्राी ने 1519 ई. में करवा दी थी। इसी मंदिर में कीर्तन–सेवा सूरदास को बल्लभाचार्य ने सौंपी थी। सूरदास की तीन रचनाएँ प्रसि (सूरसागर, सूर सूरावली और साहित्य लहरी। साहित्य लहरी वेफ एक पद में सूर ने यह स्वीकार किया है कि वे पृथ्वीराज रासो वेफ रचयिता चंद्रबरदाई वेफ वंशज थे। इस वुफल में हरीचंद वेफ सात पुत्राों में सबसे छोटे सूरजदास या सूरदास थे। सूरदास पहले विनय और दास्य भाव वेफ पद लिखा करते थे। विंफतु बल्लभाचार्य की आज्ञा से उन्होंने श्रीमद्भागवत पुराण की कथा का गायन पदों में किया। सूरसागर की कथा भागवत पुराण वेफ दशम स्वंफध से ली गई है। इसमें कृष्णजन्म से लेकर श्रीकृष्ण वेफ मथुरा जाने तक की कथा पुफटकल पदों में है। साहित्य लहरी मे सूरदास वेफ दृष्टवूफट पद संकलित हैं। सूरदास ब्रजभाषा वेफ पहले सशक्त कवि हैं, विंफतु उनकी रचना इतनी प्रगल्भ और काव्यपूर्ण है कि आगे होने वाले कवियों की शृंगार और वात्सल्य संबंधी उक्तियाँ सूरदास की जूठी–सी जान पड़ती हैं। आचार्य शुक्ल ने इसीलिए कहा है कि ''सूरसागर किसी चली आती हुई गीतिकाव्य परंपरा काμचाहे वह मौखिक ही रही होμपूर्ण विकास–सा प्रतीत होता है।'' सूर वेफ शृंगारी पदों की रचना बहुत वुफछ विद्यापति की प(ति पर हुई है। सूरसागर में उपलब्ध 'दृष्टवूफट' वाले पद भी विद्यापति का ही अनुकरण हैं। आचार्य शुक्ल वेफ अनुसार, ''जैसे रामचरित गान करने वाले भक्त कवियों में गोस्वामी तुलसीदास जी का स्थान सर्वश्रेष्ठ है उसी प्रकार, कृष्णचरित गान

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

करने वाले भक्त कवियों में महात्मा सूरदास जी का'' वास्तव में ये हिंदी काव्य गगन वेफ सूर्य और चंद्र हैं। शृंगार और वात्सल्य वेफ क्षेत्रा में जहाँ तक सूरदास की दृष्टि पहुँची वहाँ तक और किसी कवि की नहीं। इसीलिए सूरदास को वात्सल्य और शृंगार रस का सम्राट कहते हैं। बाल चेष्टाओं की ऐसी स्वाभाविक एवं मनोहर झाँकी अन्यत्रा नहीं मिलती। आचार्य शुक्ल का मत है कि ''सूरदास वेफ शृंगारी पदों की रचना बहुत वुफछ विद्यापति की प(ति पर हुई।'' जहाँ तक शृंगार और वात्सल्य वर्णन का प्रश्न है शुक्ल जी मानते हैं कि ''आगे होने वाले कवियों की शृंगार और वात्सल्य की उक्तियाँ सूर की जूठी–सी जान पड़ती है।'' शृंगार और वात्सल्य वेफ क्षेत्रा में इनकी दृष्टि जहाँ तक पहुँची वहाँ तक और किसी कवि की नहीं। सूर की सबसे बड़ी विशेषता हैμनवीन प्रसंगों की उद्भावना। प्रसंगोद्भावना करने वाली ऐसी प्रतिभा तुलसी में भी नहीं थी। सूरदास की भक्ति प(ति का मेरुदंड पुष्टिमार्ग ही है। ईश्वर वेफ अनुग्रह पर भरोसा रखकर भक्त सब वुफछ छोड़कर भगवान की शरण में अपने को छोड़ देता है, सूर भी यही मानते हैंμ जा पर दीनानाथ ढरै। सोई वुफलीन बड़ो सुंदर सोई जा पर कृपा करै। सूर पतित तरि जाय तनक में जो प्रभु नेक दरै।।

कुंजी शब्द : राम एवं कृष्ण, काव्य धारा, प्रमुख, कवि एवं काव्य प्रवृत्तिया

परिचय

सगुण भक्ति धारा वेफ अंतर्गत दो प्रकार वेफ काव्य का निर्माण हुआμराम काव्य एवं कृष्ण काव्य। वे कवि जिन्होंने 'राम' को अपना आराध्य मानकर काव्य रचना की प्रथम वर्ग वेफ कवि हैं। राम को विष्णु का अवतार एवं अयोध्या नरेश दशरथ वेफ पुत्रा वेफ रूप में जाना जाता है। अतः राम भक्ति वेफ रूप में वैष्णव भक्ति का पुनराख्यान ही मध्यकालीन रामकाव्य में किया गया है। वैष्णव भक्ति का प्रचार–प्रसार करने का श्रेय रामानुजाचार्य, रामानंद, निम्बकाचार्य, माध्वाचार्य एवं श्री विष्णु स्वामी जैसे आचार्यों को जाता है। वैष्णव भक्ति वेफ माध्यम से राम और कृष्ण की विष्णु वेफ अवतारों वेफ रूप में उपासना का सर्वत्रा प्रचार हुआ और कवियों ने भी इनवेफ जीवन चरित्रा को आधार बनाकर रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

राम एवं कृष्ण काव्यधारा वेफ प्रमुख संप्रदाय, प्रवृत्तियाँ

कृष्ण काव्य परंपरा/कृष्ण काव्य धारा कृष्ण काव्य वेफ आधार ग्रंथ भागवत् पुराण और महाभारत माने जा सकते हैं। संस्कृत साहित्य म सर्वप्रथम अश्वघोष वेफ 'बु(चरित' में कृष्णलीला का वर्णन का उल्लेख है। राधा–कृष्ण की प्रेमलीलाओं का चित्राण प्राकृत भाषा में 'हाल' कवि द्वारा रचित गाहा सतसई ;गाथा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

सप्तशतीद्ध में भी किया गया है। राधा का उल्लेख भागवत् पुराण में रंचमात्रा भी नहीं है, अपितु उनवेफ व्यक्तित्व का विशद निरूपण सर्वप्रथम ब्रह्मवैवर्त पुराण में किया गया है। संस्कृत कवि 'जयदेव' ने मधुर संगीतात्मक पदावली में 'गीत गो ेवद' नामक ग्रंथ में राधा–कृष्ण की प्रेमलीलाओं का गान कर कृष्ण काव्य को एक नई दिशा प्रदान की। हदी में कृष्ण काव्य वेफ प्रवर्तन का श्रेय मैथिल कोकिल विद्यापति को है, जिन्होंने गीत गोविंदकार जयदेव का अनुसरण करते हुए सरस, मधुर शब्दावली में विद्यापति पदावली की रचना की, जिसमें राधा–कृष्ण की प्रेम लीलाओं वेफ मादक–चित्रा अंकित किए गए हैं। विद्यापति वेफ उपरांत कृष्ण काव्य को दृढ़तर आयामों पर स्थापित करने का पूरा श्रेय अष्टछाप वेफ कवियों को है। इन कवियों में सर्वप्रमुख हैंμसूरदास, जिन्होंने भागवत् पुराण का आधार ग्रहण कर कृष्ण की बाल लीलाओं एवं प्रेम क्रीड़ाओं का चित्राण करते हुए सूरसागर, साहित्य लहरी एवं सूर–सूरावली की रचना की। ऐसा कहा जाता है कि सूरदास ने सवा लाख पदों की रचना की थी, ेकतु अब वेफवल चार–पाँच हजार पद ही प्राप्त होते हैं। सूरदास वेफ अतिरिक्त अष्टछाप वेफ अन्य कवि थेμवुफंभनदास, परमानंददास, कृष्णदास, छीत स्वामी, गोविंद स्वामी, चतुर्भुजदास और नंददास। सूरदास वेफ साथ–साथ नंददास अष्टछाप वेफ कवियों में महत्त्वपूर्ण पद वेफ अधिकारी हैं। वुफंभनदास का कोई ग्रंथ उपलब्ध नहीं होता। वुफछ पद राग कल्पद्रुम, रागरत्नाकर में संकलित हैं। परमानंददास की रचनाओं का संकलन 'परमानंद सागर' तथा 'परमानंद वेफ पद' नाम से हुआ है। अष्टछाप वेफ कवियों में सूरदास और नंददास वेफ बाद इन्हीं का स्थान काव्य सौष्ठव की दृष्टि से है। कृष्णदास का भी कोई ग्रंथ उपलब्ध नहीं होता, ेकतु इनवेफ शताधिक पद उपलब्ध हैं। नंददास अष्टछाप वेफ कवियों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वे शास्त्राज्ञ विद्वान एवं काव्य मर्मज्ञ थे। उन्होंने विविध विषयों को लेकर काव्य ग्रंथों की रचना की है। इनमें प्रमुख हैंμअनेकार्थ मंजरी, रस मंजरी, सुदामा चरित, रुक्मिणीमंगल, भंवरगीत, रास पंचाध्यायी, गोव(िन लीला, नंददास–पदावली आदि। नंददास वेफ काव्यत्व को प्रकट करने वाली एक उक्ति प्रायः कही जाती हैμ''और कवि गढ़िया नंददास जड़िया''μयह उक्ति नंददास वेफ काव्यत्व की उत्कृष्टता को पूर्णतः व्यक्त कर देती है। इनवेफ अतिरिक्त गोविंद स्वामी वेफ भी पुफटकल पद प्राप्त होते हैं तथा चतुर्भुज दास एवं छीत स्वामी वेफ भी स्वतंत्रा ग्रंथ न मिलकर पुफटकल पद ही प्राप्त हुए हैं जो इन्होंने कीर्तन वेफ लिए रचे थे। अष्टछाप वेफ कवियों वेफ अतिरिक्त राधाबल्लभी संप्रदाय वेफ गोस्वामी हित हरिवंश, गौड़ीय ;चैतन्यद्ध संप्रदाय वेफ गदाधर भट्ट तथा हरिदासी संप्रदाय वेफ स्वामी हरिदास ने भी कृष्ण भक्ति काव्य की रचना की है। स्वामी हरिदास प्रसि(संगीतज्ञ थे अतः उनकी कविता में काव्य और संगीत का अद्भुत मिश्रण प्राप्त होता है। इनकी दो रचनाएँ उपलब्ध होती हैंμ'सि(ांत वेफ पद' और 'वेफलिमाल'। इस काल वेफ वुफछ अन्य कृष्ण भक्त कवियों में मीराबाई तथा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

रसखान का नाम भी लिया जा सकता है। मीरा ने स्पुफट पदों की रचना की जबकि रसखान ने सुजान रसखान, प्रेमवाटिका, दान लीला, अष्टयाम की रचना की है। इसी परंपरा वेफ एक और प्रसि(कवि नरोत्तमदास हुए हैं जिन्होंने सुदामा चरित की रचना की। कृष्ण काव्य परंपरा का विकास रीतिकाल एवं आधुनिक काल में भी निरंतर होता रहा। रीतिकाल वेफ सभी कवियों ने एवं आधुनिक काल वेफ ब्रजभाषा कवियों ने कृष्ण को वेंफद्र बिंदु बनाकर अनेक काव्य ग्रंथ लिखे, ेकतु उनका परिचय देना यहाँ अप्रासंगिक होगा।

कृष्ण भक्ति वेफ प्रमुख संप्रदाय

कृष्ण भक्ति वेफ अनेक संप्रदाय मध्यकाल में विकसित हुए हैं जिनसे कृष्ण भक्ति काव्य अत्यंत प्रभावित हुआ है। इन संप्रदायों में प्रमुख हैंμबल्लभ संप्रदाय, ेनबार्वफ संप्रदाय, राधाबल्लभ संप्रदाय, हरिदासी संप्रदाय, गौड़ीय संप्रदाय ;चैतन्य संप्रदायद्ध आदि। इनका संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। बल्लभ संप्रदाय बल्लभ संप्रदाय वेफ प्रवर्तक बल्लभाचार्य हैं, उनकी मान्यताएँ शु(ाद्वैत दर्शन से मेल खाती हैं, जिसमें माया को कोई स्थान नहीं दिया जाता। इन्होंने भक्ति वेफ लिए 'पुष्टिमार्ग' को अपनाया, जिसवेफ अंतर्गत भगवान वेफ अनुग्रह ;पुष्टिद्ध पर विशेष बल दिया जाता है। सच्ची भगवद् कृपा को ही 'पुष्टि' कहा जाता है। सच्चा भक्त अपने को ईश्वर वेफ आश्रय में छोड़ देता है। गीता में भी इसी ओर संवेफत करते हुए श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा हैμ'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेवंफ शरणं व्रज।' बल्लभाचार्य ने माया की स्वतंत्रा सत्ता को अस्वीकार करते हुए शंकर द्वारा प्रतिपादित अद्वैतवाद को शु(किया, इसीलिए उनका मत शु(ाद्वैतवाद कहा जाता है। उन्होंने माया वेफ दो भेद माने हैंμविद्या माया, अविद्या माया राधारूपा है जो ब्रह्म की लीला शक्ति है तथा इसी से संसार का निर्माण हुआ है। अविद्या माया जीव वेफ मन की उपज होने से असत् है जो मन में विद्या वेफ उदय होते ही नष्ट हो जाती है। अविद्या नाश से ही जीव मुक्त हो जाता है। बल्लभाचार्य जी का मत प्रवृत्ति मार्गी है, क्योंकि वे विद्या माया से उत्पन्न संसार को सत्य मानते हैं जबकि अविद्या माया से उत्पन्न संसार को असत् मानते हैं।

बल्लभाचार्य जी ने गोव(ंन पर्वत पर स्थिति श्रीनाथ जी वेफ मंदिर को अपने संप्रदाय का वेंफद्र बनाया जहाँ अष्टयाम ;आठों प्रहरद्ध कीर्तन चलता रहता था, इस हेतु उन्होंने सूरदास, वुंफभनदास, परमानंददास, कृष्णदास, आदि प्रमुख भक्तों को नियुक्त किया। बाद में बल्लभाचार्य की मृत्यु वेफ बाद उनवेफ पुत्रा गोस्वामी विट्ठलनाथ ने अपने चार शिष्यों गोविंद स्वामी, छीत स्वामी, चतुर्भुजदास और नंददास को भी इस

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

कार्य वेफ लिए नियुक्त किया। इन आठ भक्त कवियों पर गोस्वामी विट्ठलनाथ ने अपने आशीर्वाद की छाप लगायी, इसीलिए इन्हें 'अष्टछाप' वेफ कवि कहा जाता है। अष्टछाप की स्थापना 1565 ई. में हुई थी। निम्बार्वफ संप्रदाय निम्बार्वफ संप्रदाय का कृष्णभक्ति वेफ प्रचार–प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। निम्बर्काचार्य यद्यपि दक्षिण वेफ थे तथापि इनका कार्यक्षेत्रा ब्रज प्रदेश रहा है। वे श्रीकृष्ण को परब्रह्म मानते हैं तथा राधा–कृष्ण की युगल मूखत वेफ उपासक हैं। निम्बार्वफ संप्रदाय में राधा का स्वकीया रूप स्वीकार किया गया है। निम्बर्काचार्य वेफ अनुसार श्रीकृष्ण जगत वेफ निमित्त कारण भी हैं और उपादान कारण भी। वह परब्रह्म इसीलिए द्वैतरहित ;अद्वैतद्ध है, ¯कतु वह जीव और जगत से विलक्षण होने वेफ कारण द्वैत भी कहा जा सकता है। द्वैत और अद्वैत वेफ इस समन्वय वेफ कारण ही इनवेफ मत को 'द्वैताद्वैतवाद' कहा जाता है। वे जीव को ईश्वर का अंश मानते हुए भी ईश्वर को जीव से विलक्षण मानते हैं। निम्बर्काचार्य वेफ दार्शनिक सि(ांतों की व्याख्या 'वेदांत पारिजात सौरभ' एवं 'दशश्लोकी' नामक ग्रंथों में की गई है। निंबार्वफ संप्रदाय में प्रेमलक्षणा दाम्पत्य भक्ति को सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

राधाबल्लभ संप्रदाय

राधाबल्लभ संप्रदाय का प्रवर्तन स्वामी हित हरिवंश ने वृंदावन में किया। इस संप्रदाय मे प्रेम को भी भक्ति का मूलाधार बताया गया है। अनंत भावों और अतंत रूपों में नित्य क्रीड़ा करने वाला प्रेम ही परम तत्व है। डॉ. विजयेंद्र स्नातक वेफ अनुसारμ''इस संप्रदाय में न तो मुक्ति की कामना है और न मुक्ति को कोई स्थान है। ... मुख्य रूप से नित्य विहार–दर्शन ही सहचरी ;जीवात्माद्ध का उपास्य भाव है, जिसकी प्राप्ति वेफवल प्रेम होती है। नित्य विहार वेफ विधायक चार तत्व हैंμकृष्ण, राधा, सहचरी और वृंदावन। राधा आर कृष्ण नित्यविहारी हैं और जीवात्मा सखी भाव से उनवेफ विहार दर्शन को परम सुख मानता है।'' इस संप्रदाय में राधा को कृष्ण से भी उँफचा स्थान देकर उन्हीं की उपासना प्रमुख रूप से की जाती है, कृष्ण तो गौण रूप में उपास्य हैं। इस संप्रदाय वेफ मंदिरों में राधा की मूखत कृष्ण वेफ पार्श्व में नहीं होती। श्रीकृष्ण की बायीं ओर वस्त्रा निखमत एक गद्दी होती है, जिसवेफ उफपर स्वर्ण–पत्रा पर श्रीराधा शब्द अंकित होता है। राधा बल्लभ संप्रदाय वेफ कवियों ने राधा–कृष्ण की संयोग– श्रृंगार की विविध क्रीड़ाओं का चित्राण किया है। इस संप्रदाय वफ प्रमुख भक्त कवि हैंμहित हरिवंश ;हित चौरासी, स्पुफट वाणीद्ध, हरिराम व्यास ;व्यास वाणीद्ध, ध्रुवदास ;जीवदशा लीला, रंग विनोद लीला, नित्य विलास लीलाद्ध, नेही नागरीदास ;हितवाणीद्ध आदि।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

हरिदास संप्रदाय

इसे सखी संप्रदाय भी कहा जाता है, जिसवेफ प्रवर्तक प्रसि(संगीतज्ञ स्वामी हरिदास जी थे। ये राधा–कृष्ण की विहार लीलाओं का आनंद सखी भाव से प्राप्त किया करते थे, अतः इसे सखी संप्रदाय की संज्ञा दी गई। हरिदास जी ने 'प्रेम' को ही उपास्य बताया है। उनका प्रेम सि(ांत अपने युग की भक्ति भावना को नवीन दिशा देने वाला सि(हुआ। इस सि(ांत ने भक्तों को कवि और कवियों को भक्त बना दिया। राधा–कृष्ण वृंदावन में नित्य विहार करने वाले प्रेमी जन हैं और भक्त सखी रूप में उस लीला का अवलोकन कर आनंदोपलब्धि करता है। स्वामी हरिदास वेफ पदों में ऐसी शैली है जिससे लगता है कि वे आँखों देखी घटना का वर्णन कर रहे हैं। हरिदास जी वेफ दो प्रसि(ग्रंथ हैंμसि(ांत वेफ पद और वेफलिमाल। वेफलिमाल में राधा–कृष्ण की लीलाओं वेफ रसपूर्ण चित्रा अंकित हैं। इस संप्रदाय वेफ अन्य कवियों मेंμजगन्नाथ गोस्वामी ;अनन्य सेवा निधिद्ध, बीठल विपुल, बिहारिन दास, आदि हैं।

चैतन्य संप्रदाय

इस संप्रदाय वेफ प्रवर्तक महाप्रभु चैतन्य बंगाल वेफ नवदीप नामक स्थान वेफ निवासी थे। इस संप्रदाय को गौड़ीय संप्रदाय भी कहा जाता है तथा इस मत वेफ दार्शनिक सि(ांत को 'आचिन्त्य भेदाभेद' की संज्ञा दी गई है। चैतन्य महाप्रभु की भक्ति भावना वेफ आधार ¯बदु थेμप्रेम, ममता और भावुकता। इनकी मान्यता है कि श्रीकृष्ण परम तत्व हैं जीव ईश्वर विमुख होने पर बंधनग्रस्त होता है तथा ईश्वर कृपा से मुक्त हो जाता है। मुक्ति का साधन हैμभक्ति, जिसे वे पाच प्रकार की मानते हैंμशांत, दास्य, सख्य, वात्सल्य एवं माधुर्य। चैतन्य संप्रदाय में 'परकीया भाव' से 'रस का उल्लास' माना गया है और उपपति भाव को स्वीकृति प्रदान की गई है। चैतन्य महाप्रभु वेफ संबंध में यह प्रसि(है कि वे जयदेव, विद्यापति द्वारा रचित राधा–कृष्ण की प्रेमलीलाओं को गाते हुए नृत्य करते–करते भाव–विभोर होकर रोने लगते थ और भक्ति भावना में लीन होकर प्रायः मूख्च्छत तक हो जाते थे। गौड़ देश में प्रचलित होने वेफ कारण इस संप्रदाय को गौड़ीय संप्रदाय भी कहा जाता है। इस संप्रदाय वेफ भक्त माधवदास माधुरी ;श्री माधुरी वाणीद्ध, भगवत मुदित ;वृंदावनशतद्ध आदि हैं।

कृष्ण काव्य की प्रवृत्तियाँ

कृष्ण काव्य की रचना प्रायः उन भक्त कवियों वेफ द्वारा की गई है, जो किसी–न–किसी संप्रदाय से जुड़े हुए थे, अतः कृष्णकाव्य में एकरूपता दिखाई नहीं पड़ती। कृष्णलीला का गान तो प्रायः इन सभी कवियों

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

वेफ द्वारा किया गया, परंतु राधा–कृष्ण वेफ विषय में उनकी अपनी धारणाएँ एवं मान्यताएँ रही हैं, जो उनवेफ संप्रदाय विशेष वेफ अनुसार थीं। युगीन परिस्थितियों ने भी कृष्ण काव्य को किसी–न–किसी रूप में अवश्य प्रभावित किया है। बल्लभाचार्य जी ने तत्कालीन मुस्लिम शासकों वेफ अत्याचारों से पीड़ित समाज की दुर्दशा वेफ संदर्भ मे एकमात्रा श्रीकृष्ण को ही शरण–स्थल वेफ रूप में स्वीकार किया। सूपिफयों वेफ प्रेम तत्व को देखकर कृष्ण भक्त आचार्यों ने अपनी भक्ति भावना में माधुर्य भाव का समावेश कर उसे जनता वेफ लिए आकर्षक बनाया। संक्षेप में कृष्णभक्ति काव्य की प्रवृत्तियों का विश्लेषण निम्न शीर्षकों में किया जा सकता हैμ

1. कृष्ण–लीला का वर्णन

कृष्ण भक्त कवियों ने राधा–कृष्ण की लीलाओं का वर्णन अपने काव्य में प्रमुखता से किया है। विभिन्न संप्रदायों में दीक्षित इन भक्त कवियों ने श्रीकृष्ण वेफ मधुर रूप की झाँकी अंकित करते हुए उनकी बाललीला एवं प्रेमलीला का चित्राण अपनी रचनाओं म किया है। मध्यकालीन कृष्णभक्त कवियों ने कृष्ण की लोकरंजनकारी लीलाओं को अपने काव्य का विषय बनाकर जनता को माधुर्य रस में आवंफठ निमग्न कर दिया। इन्होंने कृष्ण वेफ बाल जीवन एवं किशोर जीवन की लीलाओं का उन्मुक्त गान किया, यही कारण है कि समूचा भक्तिकालीन कृष्ण काव्य माधुर्य भाव से ओत–प्रोत है। उस समय गोपाल कृष्ण की प्रेम लीलाओं का श्रवण, ¯चतन एवं गायन कवि कर्म समझा जाने लगा था, इसीलिए भजन–कीर्तन करने वाले पद रचना करते हुए अनायास कवि बन गए। सूरकाव्य में कृष्ण की प्रेम लीलाओं का व्यापक वर्णन हुआ है। इनवेफ अतिरिक्त चैतन्य संप्रदाय, हरिदासी संप्रदाय एवं निंबार्वफ संप्रदाय वेफ कवियों ने भी माधुर्य भाव से ओत–प्रोत कृष्ण लीलाओं का गान करते हुए काव्य रचना की। कृष्ण की प्रेम लीलाएँ ही परवर्ती रीतिकालीन साहित्य में लौकिक शृंगार की प्रचुरता का कारण बनीं, ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है।

2. प्रेमलक्षणा भक्ति

कृष्ण भक्त कवियों की भक्ति प्रेमलक्षणा भक्ति है। श्रीकृष्ण की प्रेममयी मधुर रस से ओतप्रोत छवि को अपने काव्य का विषय बनाकर इन कवियों ने प्रेम तत्व का विशद निरूपण किया। संपूर्ण कृष्णकाव्य माधुर्य भाव से ओतप्रोत है। निंबार्वफ संप्रदाय में जहाँ स्वकीया भाव पर बल देते हुए राधा–कृष्ण वेफ दाम्पत्य प्रेम का चित्राण किया गया है, वहीं चैतन्य संप्रदाय में परकीया–भाव में माधुर्य की चरम परिणति मानी गई है। कृष्णकाव्य में 'रति' भाव वेफ तीनों प्रधान रूपμदाम्पत्य रति, वात्सल्य रति और भगवद् विषयक

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

रतिμउपलब्ध हो जाते हैं। कृष्ण–प्रेम में मर्यादा का पालन न तो कृष्ण भक्त कवियों को स्वीकार था और न ही उनकी गोपियों को। इसीलिए लोक और वेदों में वख्णत सामाजिक विधि–निषेध कृष्ण वेफ प्रेम में तिरोहित कर दिए गए हैं। कृष्ण भक्त कवियों ने प्रेम भावना वेफ नवीन आयाम उद्घाटित कर जनता को प्रेम रस में सराबोर कर दिया है। इन कवियों में वात्सल्य, सख्य और माधुर्य वेफ क्षेत्रा में कृष्ण लीलाओं का गान करते हुए अपनी भक्ति भावना का परिचय दिया। यद्यपि वुफछ कृष्ण भक्त कवियों ने विनय से युक्त दास्य भाव वेफ पद भी लिखे हैं, ेकतु परिमाण की दृष्टि से माधुर्य भाव वेफ पद ही अधिक लिखे गए। कृष्ण भक्ति काव्य में कांताभाव की भक्ति को विशेष महत्त्व दिया गया और उसमें भी परकीया भाव को प्रमुखता दी गई, क्योंकि इसे वे आदर्श प्रेम स्वीकार करते हैं।

3. सौंदर्य चित्राण

संपूर्ण कृष्ण काव्य प्रेम, सौंदर्य एवं श्रृंगार रस से ओत–प्रोत है। मानव सौंदर्य, प्रकृति सौंदर्य एवं भाव सौंदर्य से आप्लावित कृष्ण काव्य जन मन को अनुरंजित करने में पूर्ण समर्थ है। कवियों ने कृष्ण वेफ बाल सौंदर्य की झाँकी अंकित करने वेफ साथ–साथ राधा–कृष्ण वेफ किशोर सौंदर्य का भी हृदयग्राही वर्णन किया है। उनकी प्रणय–क्रीड़ाएँ अपूर्व सौंदर्य से समन्वित हैं। यही नहीं ब्रज भूमि की सुषमा का चित्राण भी कृष्ण काव्य में किया गया है। राधा–कृष्ण की विहार स्थली, पावन यमुना तट, वृंदावन, मधुवन, वुंफज और कछार कृष्ण काव्य में सर्वत्रा व्याप्त हैं। कृष्ण वेफ सौंदर्य मंडित शरीर का वर्णन इन कवियों ने बड़ी तन्मयता से किया हैμ सोभा कहत कही न ैह जावै। अँचवत अति आतुर लोचनपुट मन न तृप्ति कौं पावै।। प्रति प्रति अंग अनंग कोटि छबि सुनि सखि परम प्रवीन। सूरदास जहं दृष्टि परति है होत तहीं लव लीन।। राधा भी अपर्व सुषमा से मंडित हैं और उनकी अनिर्वचनीय शोभा मन को आींादित करने में समर्थ है। निम्न पंक्तियों में राधा वेफ सौंदर्य को देखा जा सकता हैμ काम कमान समान भौंह दोउ चंचल नैन सरोज। अलि गंजन अंजन रेखा वैफ बरसत बान मनोज।।

4. प्रकृति चित्राण

कृष्ण काव्य का वेंफद्र हैंμश्रीकृष्ण और उनकी लीला स्थली है ब्रजभूमि, जो अपने अनंत सौंदर्य वेफ लिए विख्यात रही है। यही कारण है कि कृष्णभक्त कवियों ने जहाँ राधा–कृष्ण वेफ सौंदर्य का चित्राण किया है, वहीं उनकी विहार स्थली ब्रजभूमि की अनंत सुषमा का निरूपण भी अपनी रचनाओं मे किया है। भाव प्रधान होने से कृष्ण काव्य में प्रकृति चित्राण उद्दीपन रूप में अधिक हुआ है, आलंबन रूप में बहुत कम, परंतु

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

दृश्यमान जगत का कोई भी सौंदर्य उनकी आँखों से टूटा नहीं है। डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा वेफ शब्दों मेंμ''पृथ्वी, अंतरिक्ष, आकाश, जलाशय, वन प्रांत, यमुना–वूफल तथा वुंफजभवन की संपूर्ण शोभा इन कवियों ने प्रत्यय या परोक्ष रूप में निःशेष कर दी है।'' भाव की पृष्ठभूमि में किया गया प्रकृति चित्राण भी अत्यंत हृदयग्राही बन पड़ा है। वियोग व्यथित गोपियों को अब यमुना व्यर्थ में बहते हुए, भौरे व्यर्थ में गजार करते हुए तथा कमल व्यर्थ में ही पुष्पित होते हुए जान पड़ते हैं। पहले जो लताएँ अति सुंदर लगती थीं अब मन को दग्ध करती हैंμ तब ये लता लगति अति सीतल, अब भई विषम ज्वाल की पुंजै।

इन कवियों ने मानव प्रकृति को चित्राण करने में भी अपनी सूक्ष्म पर्यवेक्षण शक्ति का परिचय दिया है।

5. रस योजना

कृष्ण काव्य का मूल प्रतिपाद्य हैμकृष्ण की बाललीला एवं प्रणय क्रोड़ाओं का चित्राण, अतः विषयवस्तु वेफ अनुसार उसमें वात्सल्य एवं श्रृंगार रस की प्रधानता है। इन दोनों रसों का पूर्ण परिपाक कृष्ण भक्ति साहित्य में हुआ है। सूरदास वात्सल्य वेफ सम्राट कहे जाते हैं, क्योंकि उन्होंने बाल मनोभावों का ऐसा हृदयगाही वर्णन अपने पदों में किया है, जो अन्यत्रा कहीं दिखाई नहों पड़ता। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने सूरदास वेफ वात्सल्य वर्णन पर टिप्पणी करते हुए लिखा हैμ''बालकृष्ण की चेष्टाओं वेफ चित्राण में कवि कमाल की होशियारी और सूक्ष्म निरीक्षण का परिचय देता है। न उसे शब्दों की कमी होती है, न अलंकार की, न भावों की और न भाषा की।'' 'मैया मैं न ँह माखन खायो' तथा 'मैया कब ँह बढ़ैगी चोटी' जैसे पदों का माधुय सूर वेफ वात्सल्य वर्णन की विशेषताओं को उजागर करने में पूर्ण समर्थ है। संयोग और वियोग श्रृंगार की सुंदर योजना भी सूर एवं अन्य कृष्ण भक्त कवियों वेफ काव्य में हुई है। राधा–कृष्ण की प्रेम लीलाओं वेफ चित्राण में सूर ने अपनी समस्त प्रतिभा एवं काव्य वुफशलता का परिचय दिया है। भ्रमरगीत प्रसंग में गोपियों वेफ विरह का अत्यंत मनौवैज्ञानिक वर्णन किया गया है। मीरा, सूर तथा नंददास ने वियोग श्रृंगार वेफ अत्यंत माखमक चित्रा अपने काव्य में अंकित किए हैं। रीति तत्व का समावेश कृष्ण काव्य में श्रृंगार वर्णन वेफ साथ–साथ रीति तत्व का समावेश भी हो चला था। कवियों ने नायिका–भेद एवं अलंकार–निरूपण करना प्रारंभ कर दिया था। सूरदास एवं नंददास की कृतियों में रीति तत्व का यह समावेश प्रचुरता से है। सूरदास ने 'साहित्य लहरी' में नायिका भेद एवं अलंकार–वर्णन किया है जबकि नंददास कृत 'रस मजरी' में नायिका भेद, हाव–भाव, रति आदि का विशद निरूपण किया गया है। नंददास का एक अन्य रीतिपरक ग्रंथ हैंμ'विरह मंजरी' जिसमें विरह वेफ काव्यशास्त्रीय भेद समझाए गए हैं। श्रीकृष्ण की शोभा को लेकर नख–शिख वर्णन की परंपरा भी चल रही थी और उसी का आधार लेकर)तु वर्णन भी आरंभ हो गया था।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

इस प्रकार कृष्ण भक्ति में ही रीतिशास्त्रा का परिशीलन होने लगा। इस संबंध में अपना मत व्यक्त करते हुए डॉ. रामवुफमार वर्मा ने लिखा हैμ''कृष्ण काव्य का वर्ण्य विषय कृष्ण भक्ति में ही सीमित न रहकर नख–शिख,)तु वर्णन और नायिका भेद में विस्तार पाने लगा। इस समय भाषा परिमाखजत हो गई थी, अतः अलंकार योजना भी भाषा वेफ साथ होने लगी थी।'' रीतिकाल में प्रचुरता से जिस रीति तत्व का निरूपण हुआ उसका बीज निश्चित रूप से कृष्ण भक्ति काव्य में उपलब्ध ळें

7. काव्य रूप

कृष्ण–काव्य जीवन वेफ एक सीमित पक्ष को लेकर ही चला अतः उसमें महाकाव्योचित उदात्तता एवं व्यापकता दिखाई नहीं पड़ती। कृष्ण वेफ किशोर जोवन एवं बाल–जीवन की लीलाओं का विशद चित्राण तो उसमें हुआ है, परंतु महाभारत वेफ योगेश्वर कृष्ण जो राजनीति विशारद एवं धर्मरक्षक हैं, उनका चित्राण कृष्ण भक्ति काव्य में प्रायः नहीं हुआ है। जीवन वेफ प्रेम पक्ष को लेकर लिखे गए इस काव्य में मधुरता, सरसता, रागात्मकता तो है कतु उदात्तता, गरिमा एवं भव्यता वेफ स्तर पर वह राम काव्य से तुलना नहीं कर सकता। यही कारण है कि रामभक्त कवियों ने जहाँ प्रबंधकाव्य की रचना की वहीं कृष्णभक्त कवियों ने मुक्तक काव्य की रचना की। कृष्णलीला वेफ जिस विषय को लेकर ये कवि अग्रसर हुए वह वस्तुतः गीति एवं मुक्तक शैली वेफ लिए ही उपयुक्त था।

यद्यपि इस काल में कृष्ण वेफ जीवन को आधार बनाकर वुफछ प्रबंध काव्य भी लिखे गए यथाμभंवरगीत, रास पंचाध्यायी, सुदामा चरित, रुक्मिणी मंगल आदि, तथापि प्रधानता मुक्तक काव्य की ही रही है। प्रबंध रचना वेफ लिए जो व्यापक दृष्टि एवं संबंध निर्वाह कवि वेफ लिए अपेक्षित है, उसका अभाव इस काल वेफ कवियों में देखा जा सकता है।

8. भाषा शैली

संपूर्ण कृष्ण काव्य ब्रजभाषा में लिखा गया है। भाषा की दृष्टि से कृष्ण भक्त कवि अत्यंत समर्थ एवं सशक्त माने जाते हैं। सूरदास की ब्रजभाषा परिनिष्ठित एवं साहित्यिक है तथा उसमें प्रत्येक मनोभाव को सपफलतापूर्वक व्यक्त करने की क्षमता है। उनकी ब्रजभाषा अपनी कोमलता, सरसता, माधुर्य एवं पदलालित्य वेफ कारण व्यापक काव्य भाषा वेफ रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी थी और कई सौ वर्षों तक काव्यभाषा वेफ पद पर प्रतिष्ठित रही। ब्रज की लोक प्रचलित भाषा को व्यापक काव्यभाषा बनाकर इन्होंने अपनी सामर्थ्य का

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

परिचय दिया है। नंददास को भी ब्रजभाषा का अच्छा ज्ञान था। इसीलिए उनवेफ संबंध में कहा जाता हैμ'नंददास जड़िया'। इन कवियों की भाषा की जड़ें लोकभाषा में निहित रही हैं। भाषा में लोक प्रचलित मुहावरों एवं सूक्तियों का भी सुंदर समावेश करते हुए इन्होंने अभिव्यक्ति को पूर्णता प्रदान की है। ब्रजभाषा की व्यापक प्रतिष्ठा हो जाने पर भी इस समय तक उसका कोई परिमाखजत व्याकरण सम्मत स्वरूप स्थिर नहीं हो पाया था। यही कारण है कि कवियों ने मनमाने प्रयोग करते हुए शब्दों को इच्छानुसार तोड़ा–मरोड़ा है तथा ंलग संबंधी गड़बड़ी कर दी है। मीरा की भाषा पर राजस्थानी प्रभाव है जबकि रसखान की भाषा शु(ब्रजभाषा है। कृष्ण भक्त कवियों ने प्रायः गीति शैली का प्रयोग किया है। संगीतात्मकता, भावात्मकता, वैयक्तिकता, कोमलकांत पदावली जैसे गीति तत्वों का समावेश इनकी रचनाओं में मिल जाता है। सूर आदि समर्थ कवियों वेफ पदों में अनूठी भाव व्यंजकता, वक्रता, लाक्षणिकता वेफ कारण शैलीगत प्रौढ़ता भी दिखाई पड़ती है।

9. अलंकार एवं छंद

सूरदास, नंददास, रसखान एवं मीरा कृष्ण भक्त कवियों में अग्रगण्य हैं। इनवेफ काव्यों में अलंकारों की मनोहारी सुषमा देखी जा सकती है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विभावना, असंगति, प्रतीक आदि अलंकारों का सौंदर्य इनवेफ काव्य में यत्रा–तत्रा देखा जा सकता है। यह अलंकार निरूपण न तो चमत्कार प्रदर्शन वेफ लिए है और न ही प्रयत्न साध्य है, अपितु भाव व्यंजना वेफ लिए आवश्यक होने पर ही अलंकारों का सहारा लिया गया है। इन कवियों का सादृश्य विधान भी अत्यंत सशक्त एवं सुंदर बन पड़ा है। कृष्ण भक्त कवियों ने प्रायः पद लिखे हैं। सूरसागर में पदों की प्रधानता है। नंददास ने रूप मंजरी तथा रास मंजरी में दोहाμचौपाई का प्रयोग किया है। रसखान ने कवित्त और सवैये लिखे हैं। वुंफडलिया, गीतिका, अरिल्ल जैसे वुफछ अन्य छंदों का प्रयोग भी कृष्ण काव्य में हुआ है। प्रमुख कृष्ण भक्त कवि एवं कृतियाँ

कृष्णभक्ति काव्यधारा वेफ प्रमुख कवि

अनुग्रह वेफ आगे ज्ञान, कर्म, योग, उपासना सब निरर्थक हैं। सूर की भक्ति सखा भाव या सख्य भाव की भक्ति है। सूर की भक्ति प(ति में जो माधुर्य भाव मिलता है वह मुख्य रूप से लीलाओं पर आधारित है। भ्रमरगीत की गोपियों में भक्ति का यह स्वरूप उपलब्ध होता है, जिसमें उनवेफ हृदय की पवित्राता, निश्छलता, अनन्यता और उदारता दिखाई पड़ती है। 'भ्रमरगीत' सूरसागर का सर्वाधिक मर्मस्पर्शी एवं वाग्वैदग्ध्यपूर्ण अंश है जिसमें गोपियों का वचन वक्रता अत्यंत मनोहारिणी है। यह एक सुंदर उपालभ्य काव्य है जिसमें उ(व–गोपी संवाद वेफ माध्यम से निर्गुण का खंडन और सगुण का मंडन किया गया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

सूर ने नवीन प्रसंगों की जो उद्भावना की है, वह उनकी मौलिक विशेषता है। आचार्य शुक्ल वेफ अनुसार प्रसंगोद्भावना करने वाली ऐसी प्रतिभा हम तुलसी में नहीं पाते। बाललीला एवं प्रेमलीला वेफ भीतर ऐसे अनेक छोटे–छोटे मनोरंजक वृत्तों की कल्पना सूर जैसा समर्थ कवि ही कर सकता था। भ्रमरगीत वेफ अंतर्गत सूरदास ने प्रेमदशा वेफ भीतर न जाने कितनी मनोवृत्तियों की व्यंजना गोपियों वेफ वचनों द्वारा कराई है। सूर की प्रशंसा में यह दोहा बहुत प्रसि(हैμ कधौ सूर को सर लग्यो कध्यों सूर की पीर। कधौ सूर को पद लग्यो बेध्यो सकल सरीर।। नंददास ;1533–1583द्ध नंददास की गणना अष्टछाप वेफ कवियों में की जाती है। इन्हें गोस्वामी विट्ठलनाथ जी ने अष्टछाप में अपना शिष्य बनाकर शामिल किया था। नंददास जी वेफ बारे में जो विवरण गोवुफलनाथ कृत 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' में है, उसे शुक्लजी ठीक नहीं मानते। वार्ता ग्रंथों में उन्हें प्रसि(कवि गोस्वामी तुलसीदास का भाई बताया गया है, जो नितांत गलत सि(हो चुका है। संभवतः बल्लभ संप्रदाय को महिमामंडित करने हेतु वार्ताग्रंथों में यह उल्लेख किया गया है। डॉ. नगेंद्र वेफ अनुसार, नंददास का जन्म 1533 ई. में शूकर क्षेत्रा ;सोरोंद्ध वेफ रामपुर गाँव में हुआ था तथा मृत्यु 1583 ई. में मानसी गंगा वेफ तट पर हुई। गोसाईं विट्ठलनाथ से पुष्टिमार्ग की दीक्षा लेने पर उनका जीवन ही बदल गया तथा सूरदास वेफ संपर्वफ में आकर और उनकी भक्ति भावना देखकर उनका शास्त्रा–मोह भंग हुआ। ब्रजभाषा काव्य में 'सूरदास' वेफ उपरांत 'नंददास' ही सर्वाधिक प्रतिभाशाली कवि माने जाते हैं। वे बहुमुखी प्रतिभा संपन्न व्यक्ति थे। उन्होंने विविध शास्त्रों का अध्ययन किया था

अनेकार्थमंजरी और मानमंजरी दोनों ही शब्दों वेफ पर्यायकोश हैं। मानमंजरी चमत्कार प्रधान रचना है। छंद की प्रथम पंक्ति में पर्यायवाची हैं आर दूसरी पंक्ति में कवि ने उस शब्द का प्रयोग कर दूती द्वारा राधा वेफ शृंगार का वर्णन किया है। यह उनवेफ प्रकांड पांडित्य का बोधक ग्रंथ है। विरह मंजरी में कृष्ण वेफ विरह में एक ब्रजवासी की विरह दशा का भावात्मक चित्राण है। रूपमंजरी को प्रेमाख्यानक परंपरा का ग्रंथ माना गया है। रास पंचाध्यायी रोला छंद में लिखित नंददास की सर्वश्रेष्ठ कृति है जिसमें कवि ने लौकिक एवं पारलौकिक प्रेम का समन्वय किया है। वियुक्त आत्मा ;गोपीद्ध रासलीला वेफ माध्यम से रसरूप परमात्मा ;श्रीकृष्णद्ध से मिलने को व्यावुफल है, प्रयत्नशील है। इस ग्रंथ की उत्कृष्ट एवं काव्यत्व को देखकर ही नंददास वेफ विषय में यह कहा गया हैμ'और कवि गढ़िया, नंददास जड़िया।' भंवरगीत भ्रमरगीत परंपरा का ग्रंथ है जिसमें कविवर नंददास ने उ(व–गोपियों की विरह दशा का निरूपण किया है। यह उनवेफ दार्शनिक विचारों, परिपक्व ज्ञान एवं विवेक बु(वेफ साथ भक्ति भावना का भी परिचायक है। 'सि(ांत पंचाध्यायी' में कृष्ण की रासलीला की आध्यात्मिक व्याख्या करते हुए कृष्ण, वृदांवन, वेणु, गोपी, रास आदि शब्दों की आध्यात्मिक रूप प्रदान किया है। नंददास की भाषा, कवित्व शक्ति, शब्द चयन की योग्यता, विद्वता उत्कृष्ट

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

कोटि की है। मधुर, सरस ब्रजभाषा का जैसा प्रयोग उन्होंने किया वैसा सूर वेफ अतिरिक्त और किसी ने नहीं किया।

राम काव्य धारा

राम को विष्णु का अवतार एवं अयोध्या नरेश दशरथ पुत्रा वेफ रूप में जाना जाता है, अतः राम भक्ति वेफ रू‍ में वैष्णव भक्ति का पुनराख्यान ही मध्यकालीन रामकाव्य में किया गया है। राम काव्य का विकासμराम काव्य वेफ आधार ग्रंथ वेफ रूप में संस्कृत की वाल्मीकि रामायण को माना जा सकता है। बाद में महाभारत वेफ रामोपाख्यान में भी यही रामकथा वर्णित की गई। संस्कृत वेफ वुफछ अन्य ग्रंथों में भी 'राम' विषयक आख्यान उपलब्ध होते हैं, यथाμअगस्त्य संहिता, राघवीय संहिता, रामरहस्योपनिषद् अध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण, अद्‌भुत रामायण, भुशुण्डि रामायण, विष्णु पुराण, वायु पुराण और भागवत् पुराण। राम को पूर्ण ब्रह्म मानते हुए अनेक पुराणों में रामकथा वेफ अनेक प्रसंग दिखाई पड़ते हैं। ¯हदी रामकाव्य का मूल आधार वाल्मीकि रामायण एवं अध्यात्म रामायण जैसे वुफछ ग्रंथ ही हैं। हदी राम काव्य से पूर्व संस्कृत, प्राकृत, पालि एवं अपभ्रंश साहित्य में राम काव्य की रचना हुई है। दक्षिण वेफ अलवार भक्तों ने भी राम भक्ति वेफ विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। बारह अलवार भक्तों में से चारμवुफलशेखर, परकाल, विष्णुचित्त, एवं शठकोप रामोपासक थे। संस्कृत में वाल्मीकि रामायण वेफ अतिरिक्त राम कथा पर आधारित अन्य ग्रंथ हैंμकालिदास कृत रघुवंश, वुफमार पाल कृत जानकीहरण, भवभूतिकृत उत्तर रामचरित, जयदेव कृत प्रसन्न राघव, क्षेमेन्द्र कृत रामायण मंजरी आदि। जैन कवि स्वयंभू रचित प्राकृत भाषा में पउमचरिउ राम कथा का प्रसि(ग्रंथ है। इसवेफ अतिरिक्त पुष्पदंत कृत महापुराण में राम कथा का उल्लेख है।

राम काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

राम काव्य परंपरा का यद्यपि एक लंबा इतिहास है, तथापि इस परंपरा वेफ वेंफद्र ¯बदु हैं गोस्वामी तुलसीदास, जो हदी काव्याकाश वेफ जाज्वल्यमान नक्षत्रा की भाति सर्वत्रा अपना प्रकाश पुंज विकीर्ण कर रहे हैं। रामकाव्य परंपरा में उनवेफ ग्रंथ मील का पत्थर सि(हुए हैं। रामचरितमानस ¯हदू धर्म, संस्कृति, आचार–विचार का मापदंड बन गया है तथा यह ग्रंथ जितना लोकप्रिय हुआ है, उसकी कोई समता नहीं है। उच्चकोटि वेफ काव्यत्व से युक्त इस ग्रंथ में मानव धर्म की अद्‌भुत व्याख्या की गई है। राम काव्य परंपरा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

वेफ प्रमुख कवि होने से हम तुलसी को ही वेंफद्र मानकर रामकाव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का विश्लेषण करेंगे। इस काव्यधारा की विशेषताओं का विवेचन अग्र शीर्षकों में किया जा सकता हैμ 1. राम का स्वरूपμराम काव्य परम्परा वेफ कवियों ने भगवान विष्णु वेफ अवतार 'राम' वेफ जीवन चरित्रा को आधार बनाकर अपने काव्य ग्रंथों की रचना की। इन कवियों ने राम को परब्रह्म मानकर धर्म की स्थापना हेतु अयोध्या नरेश दशरथ वेफ पुत्रा रूप में अवतार ग्रहण कर मानवीय लीलाएँ करते हुए दिखाया है। तुलसी ने राम वेफ जिस स्वरूप की परिकल्पना रामचरितमानस में की है, वह शक्ति, शील एवं सौंदर्य का भंडार हैं। राम वेफ रूप में उन्होंने एक ऐसे मानवीय चरित्रा को प्रस्तुत किया है, जो सबवेफ लिए अनुकरणीय है और एक आदर्श पात्रा है। तुलसी वेफ राम लोक रक्षक हैं तथा अधर्म वेफ विनाशक एवं धर्म वेफ संस्थापक हैं। वे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं और श्रेष्ठतम गुणों से विभूषित हैं। तुलसी वेफ राम अपने अनंत सौंदर्य से जन–जन को मोहित करने वाले हैं साथ ही अपूर्व शील से सबवेफ हृदय को अपने वशीभूत कर लेते हैं। वे अद्वितीय वीर हैं तथा इस वीरता से अधर्म का विनाश करते हुए तत्पर दिखाई देते हैं। 2. भक्ति का स्वरूपμराम भक्ति शाखा वेफ कवियों ने राम वेफ प्रति दास्य भाव की भक्ति भावना प्रदर्शित की है। वे स्वयं को सेवक तथा 'राम' को अपना आराध्य मानते हैं। तुलसी ने रामचरितमानस में दास्य भाव की भक्ति को मुक्ति का साधन मानते हुए कहा है

निष्कर्ष

कृष्ण काव्य परंपरा का विकास रीतिकाल एवं आधुनिक काल में भी निरंतर होता रहा। रीतिकाल वेफ सभी कवियों एवं आधुनिक काल वेफ ब्रजभाषा कवियों ने कृष्ण को वेंफद्र बिंदु बनाकर अनेक काव्य ग्रंथ लिखे, कतु उनका परिचय देना यहाँ अप्रासंगिक होगा। कृष्ण भक्त कवियों ने प्रायः पद लिखे हैं। सूरसागर में पदों की प्रधानता है। नंददास ने रूप मंजरी तथा रास मंजरी में दोहाμचौपाई का प्रयोग किया है। रसखान ने कवित्त और सवैये लिखे हैं। वुंफडलिया, गीतिका, अरिल्ल जैसे वुफछ अन्य छंदों का प्रयोग भी कृष्ण काव्य में हुआ है। कृष्ण काव्य की तुलना में भक्तिकालीन रामकाव्य भले ही परिमाण की दृष्टि से न्यून हो, ¯कतु अपनी गरिमा एव उदात्तता वेफ कारण वह ¯हदी काव्य में सर्वश्रेष्ठ है। भक्तिरस से सराबोर इन कवियों की वाणी ने जनता को आशा, उत्साह एवं स्पूफखत का संदेश दिया। यही कारण है कि गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरितमानस आज राजा से लेकर रंक तक, विद्वान से लेकर मूर्ख तक सबवेफ घरों में विराज रहा है। इन कवियों का प्रदेय ¯हदी साहित्य की अमूल्य निधि है और इनकी उच्चकोटि की रचनाओं वेफ कारण ही भक्तिकाल को ¯हदी साहित्य का स्वर्ण युग माना गया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

ग्रंथ सूची

- वैदिक साहित्य के कृष्ण काव्यों की विशेषताए बताइए।
- कृष्ण काव्यधारा में कवि जयदेव के गीतगोविद का महत्व बताइए।
- सूर के विरह वर्णन की विशेषताए बताइए।
- भक्त कवि के रूप में सूरदास का मूल्यांकन कीजिए।
- सूरदास के भ्रमरगीत का प्रतिपाद्य लिखिए।
- कृष्ण काव्य परंपरा में मीरा का महत्व रेखांकित कीजिए।
- कृष्ण काव्य परंपरा में आधुनिक काल के कवियों का स्थान निर्धारित कीजिए।
- हिदी साहित्य के विकास में कृष्ण काव्य धारा के योगदान की चर्चा कीजिए।
- हिन्दी साहित्य की भूमिका – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी , राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड , नई दिल्ली।
- हिन्दी साहित्य और सवेदना का विकास – डॉ . रामस्वरूप चतुर्वेदी , लोक भारती प्रकाशन , इलाहाबाद।
- हिन्दी साहित्य का इतिहास – स 0 डॉ . नगेन्द्र , नेशनल पब्लिशिग हाउस , नई दिल्ली।